अन्नदाता सूर्य

प्रियदर्शी



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

अन्नदाता सुय्य

प्रियदर्शी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बम्बई

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

ठाकोर राणा

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७, नेताजी सुभाष रोड
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

अन्नदाता सुय्य

लगभग एक हजार साल पहले की बात है।

आज जिसे हम धरती का स्वर्ग कहते हैं, वही कश्मीर तब एक भयंकर मुसीबत में फंसा हुआ था। रंग-बिरंगे फूलों से सजी, केसर की गमक से गमकती कश्मीर की घाटी में कुहराम मचा हुआ था। उस साल खूब बारिश हुई थी। जेहलम नदी, जिसे तब वितस्ता कहा जाता था, वर्षा का पानी पी-पीकर उफन आयी थी और उसकी भयंकर बाढ़ सारी घाटी को मानो डुबाना ही चाहती थी।

जेहलम नदी की बाढ़ और वर्षा के पानी ने मिलकर, वहां की सबसे बड़ी

झील वूलर में भी बाढ़ ला दी थी। वूलर झील से निकलकर पानी सब तरफ तेजी से फैलता जा रहा था। घाटी में जगह-जगह दलदल बन गये थे।

एक खेती तो चौपट हो ही गयी थी, नयी फसल लगाने के लिए भी कहीं धरती दिखायी नहीं देती थी।

"हम अब कहां रहें?"

"हम अब क्या खायें?"

"बाजार में दाम आकाश छू रहा है।"

"धान की फसल तो सारी ही डूब गयी।"

सब तरफ लोग ऐसी ही चर्चाएं किया करते थे।

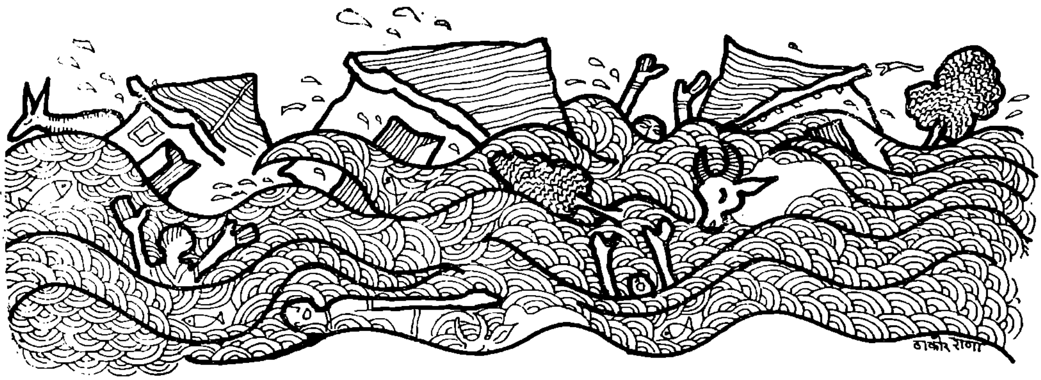
तब कश्मीर के राजा थे अवंति वर्मा।

अवंति वर्मा बड़े दयालु, प्रजा को चाहनेवाले राजा थे। घाटी की तबाही ने उनकी भी नींद हराम कर रख थी। रात-दिन वे अपने मंत्रियों के साथ बैठकर योजनाएं बनाते कि किस प्रकार इस जल-प्रलय पर काबू पाया जाये। इधर नयी-नयी योजनाएं बनतीं और उधर, देखते-देखते बाढ़ सबको धो-पोंछकर साफ कर देती।

"कोई तो रास्ता सुझाये!", राजा ने परेशान होकर अपना सर थाम लिया।

सभी मंत्री खामोश थे।





जब राह हो ही नहीं तो कोई राह बताये भी क्या ?

यह वह जमाना था जब नदियों को बांधने, धाराओं को मोड़ने, नहरें बनाने, सिंचाई का इंतजाम करने का इल्म आदमी को हासिल नहीं हुआ था।

एक दिन की बात है।

राजा अवंति वर्मा अपने मंत्रियों के साथ लंबी चर्चा के बाद परेशान होकर बोले, "तो क्या हम अपने इस प्यारे राज्य को पानी में डूब मरने के लिए छोड़ दें ? क्या कश्मीर की धरती पर कोई ऐसा गुणी आदमी नहीं बचा है जो जल-प्रलय की मार से हमें बचा सके ?"

एक मंत्री धीरे से बोला, "महाराज!"

"कहिए, आप क्या कहना चाहते हैं?' राजा ने पूछा।

"महाराज, हमने अपनी अकल तो लगा ली। सारे उपाय कर लिये, लेकिन बाढ़ है कि किसी के काबू आती ही नहीं है। अब एक निवेदन है", मंत्री कहने से पहले थोड़ा हिचका।

"हां, हां, कहिए, आपके मन में क्या है। मैं सभी सुझावों पर ध्यान दूंगा। राज्य का संकट दूर करने के लिए हमारा खजाना खुला है", राजा बोले।

"महाराज, एक युवक है अपने नगर में जिसे सब सुय्य के नाम से जानते हैं।"

"सुय्य?," राजा बोले, "मैंने तो इस नाम के विद्वान का जिक्र कभी नहीं सुना।

एक मंत्री ने हंसकर कहा, "महाराज, वह विद्वान हो तब तो आप उसका नाम सुनेंगे। वह तो पागल है, पागल!"

दूसरा मंत्री बोला, "महाराज, वह तो दो-चार बच्चों को पढ़ाकर किसी प्रकार अपनी जीविका चलाता है।"

"हमें इससे मतलब नहीं है कि वह अमीर है या गरीब", राजा गंभीरता से बोले, "मंत्री जी, उसकी लायकियत क्या है, हमें यह बताइए।'

पहलेवाले मंत्री ने फिर हिम्मत कर कहा, "महाराज, सुय्य के बारे में मैं भी बहुत नहीं जानता हूं। इतना जानता हूं कि वह बहुत तेज बुद्धिवाला, लगनशील युवक है। बच्चों को पढ़ाता है, और महाराज, वह इन दिनों नगर में सबसे यही कहता घूम रहा है कि मैं बाढ़ के इस संकट को तुरंत सुलझा सकता हूं, लेकिन क्या करूं, मेरे पास कोई साधन नहीं है।"

राजा गंभीर हो गये, "साधन तो उसे हम दे सकते हैं।"

दूसरे मंत्री ने विरोध किया, "सुय्य को साधन देना तो महाराज, बर्बादी है। वह पागल क्या बाढ़ पर काबू पायेगा, जिसके मां-बाप, कुल-गोत्र किसी का कुछ पता नहीं।"

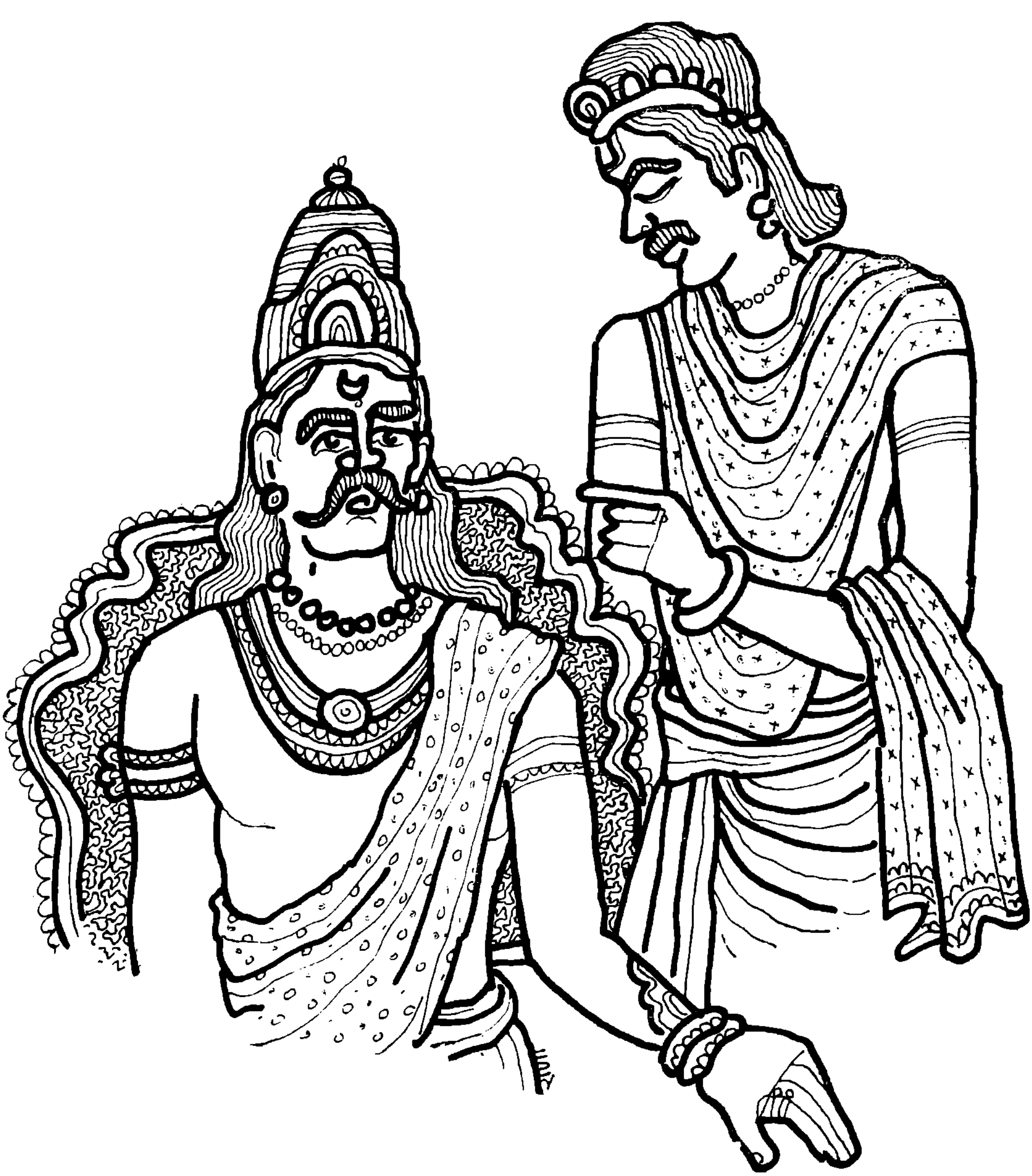
कोई तीसरा बोला, "सुना है, सुय्या नाम की सड़क बुहारनेवाली ने एक दिन सड़क साफ करते वक्त, उस लड़के को एक टूटे घड़े में पड़ा पाया था। उस नीच जाति की औरत ने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया।"

राजा अवंति वर्मा नाराज हो गये, "आपलोगों का दिमाग खराब हो गया है। मुझे सुय्य की जाति से कोई मतलब नहीं। अगर वह कश्मीर की जनता को बाढ़ के इस संकट से बचा सकता है तो उसकी जाति हम सबसे महान है!"

सारा मंत्रिमंडल चुप हो गया।

राजा फिर बोले, "मेरा हुक्म है कि सुय्य को तुरंत दरबार में आने की सूचना दी जाये। हम उससे इस बारे में चर्चा करना चाहते हैं।"

राजा का आदेश सुय्य तक पहुंचा



“मुझे सुय्य की जाति से कोई मतलब नहीं ।”



और अगले दिन ही वह युवक राज दरबार में आ खड़ा हुआ।

"तुम्हारा नाम सुय्य है?" राजा ने पूछा।

"जी हां।"

"सुना है, तुम कहते हो कि तुम्हें मौका दिया जाये तो तुम बाढ़ के संकट को सुलझा सकते हो?"

"आपने ठीक सुना है महाराज!" सुय्य ने बड़े भरोसे के साथ कहा।

राजा देर तक उससे बातें करते रहे। सुय्य की योजना और उसके आत्म-

विश्वास से राजा बहुत प्रभावित हुए ।

" मुझे आवश्यक साधन दें और मैं काम करके दिखाता हूं ", सुय्य ने कहा ।

" खजाना खुला है । तुम्हें जितनी चाहिए, स्वर्ण-मुद्राएं ले लो", राजा ने ऊंची आवाज में कहा, " यदि तुमने यह समस्या सुलझा दी तो सारा कश्मीर तुम्हारा आभारी होगा ।"

सुय्य के विरोधी मंत्री जलकर रह गये ।

एक बोला, " बाढ़ की मुसीबत के साथ-साथ, अब यह सुय्य नयी मुसीबत बनकर आया है । बड़े-बड़े विद्वान जिस समस्या को न सुलझा सके, उसे छोटी जाति का यह लड़का क्या सुलझायेगा !"

सुय्य यह सुनकर कुछ नहीं बोला ।

उसने खजाने से स्वर्ण-मुद्राओं से भरी कुछ थैलियां लीं और चुपचाप अपने काम पर निकल गया ।

वह सीधा नदी किनारे आया ।

किनारे बंधी नाव में उसने सारी थैलियां रखीं और खुद भी उसमें बैठकर, श्रीनगर से दक्षिण की ओर चल पड़ा ।



नाव चलती हुई मंडप राज्य के नंदन नामक जगह पर पहुंची तो सुय्य ने स्वर्ण-मुद्राओं से भरी दो थैलियां खोलीं, और उन्हें पानी में उलट दिया।

मंडप राज्य के लोग किनारे खड़े होकर सुय्य की मूर्खता देख रहे थे।

सुय्य की नाव और आगे बढ़ी। बारामूला के निकट, ग्यारदत्त नाम की जगह पर पहुंचकर सुय्य ने फिर कई थैलियों की स्वर्ण-मुद्राएं पानी में बिखेर दीं।

सारी घाटी में बिजली की तरह यह खबर फैल गयी।

सुय्य के पागलपन की खबर राजा तक पहुंची। राजा अवंति वर्मा का विश्वास भी एक बार हिल गया, "सुय्य सच में कहीं पागल तो नहीं हैं?"

इधर सुय्य चुपचाप आगे का हाल देखने लगा। पानी में स्वर्ण-मुद्राएं फेंकने के पीछे सुय्य की एक पक्की योजना थी।

भूखे, परेशान लोगों ने जब सुना कि पागल सुय्य ने पानी में ढेर सारी स्वर्ण-मुद्राएं फेंक दी हैं, तो वे हजारों की संख्या में जेहलम में उतर पड़े।

स्वर्ण-मुद्राएं पाने के लिए, जेहलम के बहाव के रास्ते में पड़नेवाले पत्थरों-चट्टानों को उठा-उठाकर उन्होंने किनारे फेंकना शुरू किया। जिसके हाथ एक स्वर्ण-मुद्रा लगती, वह दूसरी पाने के लिए और तेजी से पत्थर फेंकने लगता।

होता यह था कि दोनों ओर के पहाड़ों से टूट-टूटकर चट्टानें, पत्थर जेहलम में गिरते थे और इसके कारण धीरे-धीरे जेहलम का पानी उल्टी दिशा में, वूलर झील की तरफ बहने लगा था। वूलर झील में आयी बाढ़ का यही कारण था।

स्वर्ण-मुद्राओं की खोज में लगे हजारों लोगों ने दो-तीन दिनों में ही जेहलम के रास्ते से सभी चट्टानें हटा दीं और नदी का पानी तेजी से बह निकला।

वूलर झील की बाढ़ भी उतर गयी और लोगों ने राहत की पहली सांस ली। सुय्य पर लोगों का भरोसा बहुत बढ़ गया।

"एक बाढ़ तो उतर गयी लेकिन काम पूरा नहीं हुआ है", सुय्य ने लोगों से कहा, "हर साल बाढ़ से होनेवाला



नुकसान हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। यदि आप लोग मदद करें तो हम बाढ़ की मुसीबत का हमेशा के लिए अंत कर सकते हैं।"

सबने उत्साहपूर्वक सुय्य को मदद का आश्वासन दिया।

सुय्य ने जेहलम के बहाव को रोकने के लिए बड़ा बांध बनवाना शुरू किया।

नदी का पानी रोका भी जा सकता है, तब तो सपने में भी यह नहीं सोचा जाता था। लेकिन हर नया काम करने-वाला सपने तो देखता ही है। सुय्य ने भी बांध बनाने का सपना देखा।

लोगों ने भरपूर मदद की। रात-दिन की बेहद मेहनत के बाद, बांध बनकर तैयार हुआ और नदी का पानी बांध के पीछे रुक गया।

सुय्य ने लोगों को लेकर बांध के आगे, नदी के पेट की खूब सफाई की और उसे गहरा बनाया।

पहाड़ों से टूट-टूट कर चट्टानें नदी में न गिरें, इसके लिए नदी के दोनों किनारों को ऊंचा उठाकर बांधा। जब सारा काम उसकी योजना के मुताबिक हो गया तो उसने नदी का पानी रोकनेवाला बांध तुड़वा दिया।

कल-कल करता हुआ जेहलम का प्रवाह बह निकला। लेकिन आज उस नदी से किसी को डर नहीं था। आज वह मृत्यु का नहीं, जिंदगी का पैगाम लेकर बह रही थी।

राजा अवंति वर्मा ने सुय्य का काम देखा और बोले, "तुमने तो मेरे राज्य का नक्शा ही बदल दिया है। सुय्य, मुझे तुम पर गर्व है। तुम अपनी अगली योजनाओं के लिए जितना धन चाहो, खजाने से ले सकते हो।"

सुय्य ने सारी कश्मीर घाटी घूमकर देखी। जेहलम का पूरा किनारा देखा।

उन सब जगहों पर गया जहां से बाढ़ के दिनों में जेहलम का पानी किनारा तोड़कर निकल आता था। उसने उन सभी जगहों पर पानी निकलने के विशेष दरवाजे बनवाये, और छोटी-छोटी नहरों से उस पानी के बहने का इंतजाम किया।

सुय्य ने राजा से कहा, "हमारी घाटी को बाढ़ से बचाने के लिए सबसे जरूरी है कि हम जेहलम और सिंधु नदी के संगम-स्थल को बदलें।"

राजा, सुय्य की बात सुनकर अवाक रह गया, "क्या नदियों का संगम-स्थल भी बदला जा सकता है?"

"हां महाराज, बदला तो जा सकता है। लेकिन यह काम बहुत कठिन और खर्चीला है," सुय्य ने कहा।

"सुय्य, खर्च तो मैं दे सकता हूं। रही कठिनाइयों की बात, तो कठिनाइयां तुम्हें ही हल करनी होंगी", राजा बोले।

सुय्य संगम-स्थल को बदलने में जुट गया।

उन दिनों घाटी की बेंगांव नाम की जगह की बायीं ओर से सिंधु नदी और दायीं ओर से जेहलम नदी आती थी, और दोनों वन्यस्वामी के मंदिर के पास मिलती थीं। यह जगह बहुत कमजोर थी। सुय्य ने नदी की धारा को मोड़कर, वन्यस्वामी के मंदिर से ५ मील नीचे, श्रीनगर के शाहीपुर के पास दोनों नदियों का संगम बनवाया।

नदियों का संगम बदलने का यह काम इतना रोमांचक था कि तब के प्रसिद्ध कवि कल्हण ने लिखा, "संपेरा



जैसे अपने मंत्र से नाग को वश में कर लेता है, सुय्य उसी प्रकार नदियों के प्रवाह को अपने काबू में रखता है ।"

सुय्य की नजर अब वूलर झील पर थी । वूलर झील में जेहलम का पानी जब बेहिसाब घुसता था, तब झील का पानी किनारे तोड़कर आसपास के इलाकों में फैल जाता था ।

सुय्य ने वूलर झील की गहरायी मापी और उन जगहों का पता लगाया जो ज्यादा गहरे थे ।

"यदि हम जेहलम का पानी इन गहरी जगहों तक ला सकें और उनके वापस निकलने का इंतजाम करें तब वूलर की बाढ़ पर रोक लगायी जा सकती है," सुय्य ने अपने साथियों को समझाया ।

"जेहलम का पानी बांध कर यहां तक लाना संभव है क्या?" सभी साथियों ने सवाल उठाया ।

"कोशिश की जाये तो असंभव कुछ भी नहीं है", सुय्य ने कहा ।

अब बांध बनाने का एक बड़ा काम शुरू हुआ ।

जेहलम के पानी को बांध कर, वूलर झील तक लाने के लिए नदी के दोनों तटों पर पत्थर का बांध बनाया गया। बांध सात योजन (एक योजन करीब साढ़े चार मील होता है) लंबा हुआ।

उस बांध के अंदर-अंदर बहकर जेहलम का पानी, वूलर झील के गहरे हिस्सों तक पहुंचता था, और फिर विशेष रास्तों से बाहर निकल जाता था।

सुय्य तो अपने इन कामों में डूबा था। उसने जाना भी नहीं कि उसके कामों का नतीजा क्या हो रहा है, उसके कामों का घाटी को कितना लाभ हो रहा है।

खेती के लायक बहुत सारी जमीन, जो पहले पानी में डूबी थी, बाहर निकल आयी। जिन खेतों तक कभी पानी नहीं पहुंचता था, सुय्य की नहरों ने वहां तक पानी पहुंचा दिया था।

कश्मीर के उन इलाकों में, जहां वर्षा बहुत कम होती थी, अकसर फसलें सूख जाती थीं। सुय्य ने उन इलाकों में घूम-घूम कर नहरें बनवायीं और नदियों से उनमें पानी पहुंचाया। सुय्य ने खेत की मिट्टी जांचने का काम भी किया, और उस मुताबिक सिंचाई की योजना बनायी।

वह कहता था, "बाढ़ मेरे लिए किताबों में पढ़ने की चीज नहीं है। मैंने बचपन से इसकी तकलीफ बर्दाश्त की है। इसलिए मैं इसे काबू में रखना चाहता हूं।"

राजा अवंति वर्मा ने कहा, "सुय्य ने बाढ़ को काबू में क्या किया, हमारे लिए सौभाग्य के दरवाजे खोल दिए हैं।"

घाटी के नागरिकों ने कृतज्ञ भाव से कहा, "सुय्य तो हमारा अन्नदाता है- अन्नदाता सुय्य !!"

खेती के लिए ज्यादा जमीन मिली, सिंचाई के लिए पानी मिला, बाढ़ का खतरा नहीं रहा तो अनाज की पैदावार बहुत बढ़ गयी। अनाज की कीमत में गिरावट हुई।

भूखों के पेट भरने लगे और राज्य में सुख-शांति का साम्राज्य आ गया।

राजा अवंति वर्मा से अपनी नयी राजधानी अवंतिपुर नाम से बनवायी।



श्रीनगर से १५ मील पूरब में बनी इस राजधानी में उसने कई सुंदर मंदिर बनवाये। आज भी वे मंदिर अपनी कला के लिए याद किए जाते हैं।

सुय्य की घर-घर पूजा होने लगी।

कवि कल्हण ने सुय्य को देवताओं की कोटि में जगह दी और लिखा कि भगवान विष्णु को जितने काम करने के लिए चार जन्म लेने पड़े, सुय्य ने वे सब काम एक जन्म में ही कर डाले।

सुय्य की ख्याति जब आकाश छू रही थी तब सुय्य को अपनी मां सुय्या का ध्यान आया। सुय्या ने भले ही उसे जन्म न दिया हो लेकिन उसकी ममता की छाया में ही तो सुय्य बड़ा हुआ था!

सुय्य ने अपनी मां की याद में दो

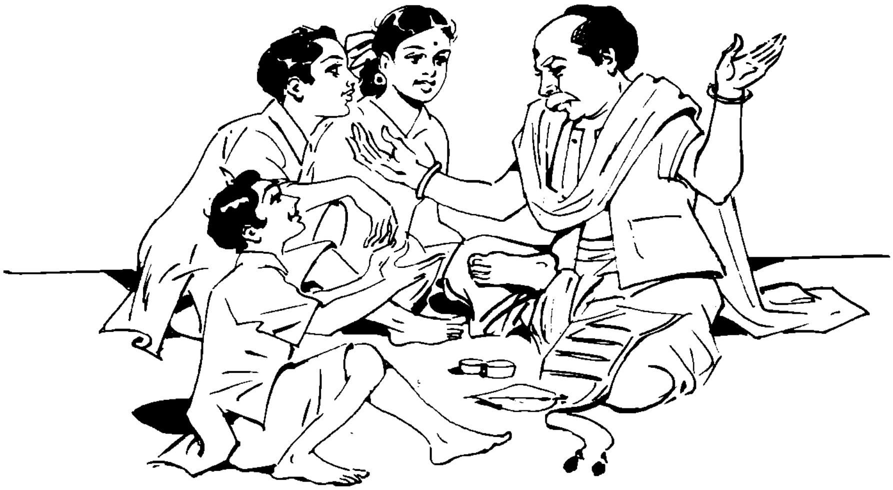
काम किए—सुय्या-सेतु नाम का पुल बनवाया और सुय्याकुंडल नाम का एक गांव बसाया। ये दोनों भी सुय्य की कारीगरी के नमूने थे।

कश्मीर घाटी को फिर से स्वर्ग बनाकर सुय्य तो चला गया, पर कश्मीर के लोग उसे नहीं भूले। जेहलम नदी जहां वूलर झील से निकलती है वहां नयी बस्ती बसायी गयी—सुय्यपुर !

वही सुय्यपुर आज सो पुर के नाम से मौजूद है और नवीं शताब्दी के उस इंजीनियर की याद दिलाता है जो अपनी जन्मजात प्रतिभा के बल पर, इतना ऊंचा उठा कि इंसान से भगवान का दर्जा पा गया। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन कैप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

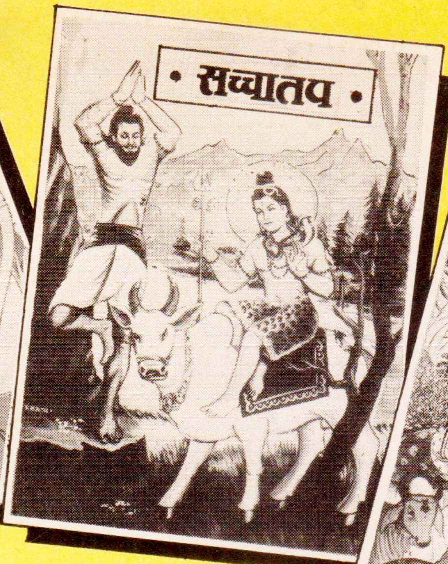
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पांचवीं किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा









बच्चों की कहानियां



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई-४००००२









